औरंगजेब की धार्मिक नीति

औरंगजेब मध्यकालीन भारत का अत्यंत ही विवादास्पद व्यक्तित्व रहा है, यही कारण है कि उसके उद्देश्यों, नीतियों एवं कार्यों को लेकर विद्वानों में गहरे मतभेद रहे हैं। जहाँ तक उसके धार्मिक नीति का प्रश्न है उसके बारे में विद्वानों की भिन्न-भिन्न राय रही है। कुछ विद्वानों का मानना है कि औरंगजेब ने अकबर की धार्मिक नीति को उलट दिया जिससे साम्राज्य के प्रति बहुसंख्यक हिन्दुओं की निष्ठा समाप्त हो गई और वे विद्रोही हो गये। इससे मुगल साम्राज्य के विघटन का मार्ग प्रशस्त हुआ। लेकिन विद्वानों का एक दूसरा वर्ग भी है जो उसकी धार्मिक नीति की तर्कनिष्ठ व्याख्या तात्कालिक राजनीतिक आर्थिक बाध्यताओं के परिपेक्ष्य में करता है तथा बताता है कि वह उतना कट्टर नहीं था जितना कि विद्वानों का कुछ समूह ठहराते हैं।

औरंगजेब अपनी इस धार्मिक नीति के लिये जितना स्वयं उत्तरदायी था उससे कहीं ज्यादा परिस्थितियाँ सर्वप्रथम उसे अपने पूर्वजों से कहीं अधिक अपनी गद्दी नशीनी की व्यवस्थितता सिद्ध करनी पड़ी क्योंकि उसका पिता अभी जीवित था पिता के जीवित रहते हुये गद्दी प्राप्त करना तुरा-ए-चुगताई की अवमानना थी। दूसरे दारा को उसने अधर्मी घोषित करके उत्तराधिकार युद्ध लड़ा था। यदि वह अपने घोषित मान्यता (इस्लाम के संरक्षक) से अलग हटता तो उसके लिये घातक होता। तीसरे अपने नाम का खुतबा पढ़वाने का उत्तावलापन एवं उलेमा वर्ग के कुचक्र में फँसना आदि महत्वपूर्ण प्रेरक तत्व थे। इसी बीच साम्राज्य के विभिन्न भागों में विद्रोह फूट पड़ा, जिसमें हिन्दुओं की ज्यादातर भागीदारी थी। इसने भी उसकी धार्मिक नीति को दिशा दी।

उपरोक्त प्रेरक तत्वों के दबाव में उसकी

धार्मिक नीति का विकास क्रमिक हुआ जिसे प्रकृति की दृष्टि से दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है। वैसे इन दो चरणों के दौरान कई उपचरण भी देखे जा सकते हैं प्रथम चरण के अन्तर्गत राज्यारोहण से लेकर 1679 के कालखंड को रखा जा सकता है जब विभिन्न कारणों से धीरे-धीरे उसकी धार्मिक नीति रूढ़िवादी एवं गैर-मुस्लिमों के प्रति भेदभावमूलक एवं विरोधपूर्ण होती गई और जिसकी परिणति जजिया को पुनः अध्यारोपित करने से हुई। दूसरा चरण 1680-1707 तक का माना जा सकता है जिसके आरंभ में तो धार्मिक नीति कट्टरवादी रही किंतु धीरे धीरे विभिन्न कारणों से उदार होती गई।

प्रथम चरण में उसकी धार्मिक नीति का उद्देश्य हिन्दू जनमत को विक्षुब्ध किये बिना उलेमाओं तथा मुस्लिम रूढ़िवादी तत्वों को संतुष्ट करना था यही कारण है कि उसने कुछ ऐसे कदम उठाये जो इस्लाम के शुद्धिकरण के संबन्ध में थे जैसे सिजदा पर प्रतिबन्ध, सिक्कों पर कलमा उत्कीर्ण होने पर रोक, नौरोज उत्सव पर रोक, सार्वजनिक स्थलों पर मद्यपान पर रोक आदि। साथ ही उसने प्रत्येक प्रांत में मुहतसिब नियुक्त किया जिसका दायित्व यह सुनिश्चित करना था कि लोग शरा के प्रावधानों का उल्लंघन न करें।

अपने शासनकाल के 11वें वर्ष में औरंगजेब ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाया जैसे - दरबार में गीत संगीत पर प्रतिबन्ध, झरोखा दर्शन, तुलादान, जन्मकुंडली निर्माण आदि पर रोक। इसी तरह उसने राजपूत शासकों को टीका लगाने, होली एवं मुहर्रम के अवसरों पर सार्वजनिक उत्सव मनाने, अमीरों द्वारा सिल्क वस्त्र पहनने आदि पर रोक लगा दिया गया साथ ही दीवाने आम की सजावट में प्रयुक्त सोने को हटा दिया गया। शाही लिपिकों को चाँदी के बजाय चीनी मिट्टी के दवात प्रयोग करने के आदेश दिये गये। आधिकारिक इतिहासलेखन

(दरबारी इतिहास लेखन) बंद करवा दिया गया। राजदरबार के सारे सजावट हटा दिये गये। स्पष्टतः इनमें से अधिकांश कदम वित्तीय समस्या को दूर करने के लिये उठाये गये थे किंतु इसका औचित्य धार्मिक आधार पर ठहराया गया।

इसी दौरान 1665 ई. में मुस्लिम व्यापारियों से लिया जाने वाला आयात चुंगी 5% से घटाकर 2½% कर दी गई। कुछ वर्षों के बाद यह भी माफ कर दिया गया जबकि हिन्दुओं से पूर्व दर पर चुंगी ली जाती रही। इसी तरह 1671 ई. में यह आदेश जारी किया गया कि खालिसा क्षेत्र के सारे करोड़ी के पद पर सिर्फ मुसलमानों को नियुक्त किया जाये। इतना ही नहीं सभी प्रान्तीय सूबेदारों को यह आदेश दिया गया कि निचले स्तर के प्रशासन में कार्यरत तमाम कर्मचारियों (मुत्सरिफ) को हटाकर उनकी जगह पर मुसलमानों को नियुक्त किया जाये। स्पष्टतः ये कदम मुसलमानों में व्याप्त बेरोजगारी को दूर करने के उद्देश्य से उठाये गये थे क्योंकि राज्य वित्तीय संकट की स्थिति में अन्य तरीकों से उनकी मदद करने की स्थिति में नहीं था, किंतु इसका औचित्य धार्मिक आधार पर सिद्ध किया गया। चाहे कारण जो रहे हों इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि ये कदम भेदभावमूलक थे।

जहाँ तक पहले चरण में मंदिरों के सम्बन्ध में औरंगजेब की नीति का प्रश्न है आरंभ में उसकी नीति वही रही जो शाहजहाँ के काल में थी अर्थात् नये मंदिरों के निर्माण पर रोक। इस दौरान कुछ मंदिर तोड़े गये खासकर सैन्य अभियानों के दौरान किंतु साम्राज्य में मंदिर तोड़े जाने की कोई आम नीति घोषित नहीं थी। यह भी उल्लेखनीय है कि गैर-मुस्लिम धर्मस्थलों एवं धर्माचार्यों को अनुदान भी दिये गये थे। उसकी धार्मिक नीति में एक जबर्दस्त मोड़ तब आया जब उसने 1679 ई.

में गैर-मुस्लिमों पर जज़िया फिर से आरोपित कर दिया। स्पष्टतः इसका उद्देश्य उलेमाओं को संतुष्ट करना एवं आर्थिक लाभ लेने साथ ही राज्य के इस्लामिक चरित्र पर बल देना था ताकि साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे विद्रोहों से निपटने के लिये समस्त मुसलमानों को गोलबंद किया जा सके।

द्वितीय चरण के आरंभ में कम से कम 1687 ई. तक औरंगज़ेब एक कट्टरवादी शासक बना रहा। इस दौरान कई मंदिर तोड़े गये, कुछ लोगों का बलात् धर्मान्तरण भी हुआ. यहाँ तक कि बीजापुर एवं गोलकुंडा पर विधर्मिता का आरोप भी लगाया गया। किंतु बीजापुर एवं गोलकुंडा के विलय के पश्चात् उसकी नीति धीरे-धीरे अपेक्षाकृत कम कट्टर होती गई। दरअसल अब परिस्थितियाँ बदल गयी थीं, जरूरतें भी बदल गई थीं तथा औरंगज़ेब को कट्टरवादी नीति से वांछित सफलता भी नहीं मिली थी। 1704 ई. में दक्कन में जज़िया की की वसूली पर रोक, मक्का भेजे जाने वाले धन पर रोक, मुसलमानों के कट्टर विरोधी पामनायक (चौध जनजाति का शासक जिसने अपने राज्य में मुसलमानों को आवास देने तक से रोका था) को 5000 का मनसब दिया जाना आदि उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करते हैं।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि औरंगज़ेब की धार्मिक नीति पूरे शासनकाल में एक जैसी नहीं रही। शासनकाल के आरंभ में उसकी नीति शाहजहाँ जैसी रही। 1666 ई. से वह उत्तरोत्तर धार्मिक कट्टरता की ओर उन्मुख हुआ जिसकी पराकाष्ठा 1679 ई. में हुई। 1687 तक उसकी नीति कट्टर रही। तदुपरांत जब उसे यह लगा कि कट्टरता की नीति वांछित फल नहीं दे रही तथा राजनीतिक जरूरतें अब बदल गई हैं तब वह कट्टरता से विमुख होने लगा।

देखा जाये तो औरंगज़ेब अपने व्यक्तिगत स्वभाव एवं विचार में एक कट्टरपंथी मुसलमान था और

इसलिये राज्य में इस्लामी विधान की श्रेष्ठता चाहता था। किंतु साथ ही बहुसंख्यक गैर मुस्लिम प्रजा के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी बखूबी समझता था। उल्लेखनीय है कि उसके शासनकाल में लगभग 1/3 भाग नौकरशाह हिन्दू थे। जब भी वह समस्याओं से अपने को घिरा पाता तब कट्टरता की नीति का सहारा लेता था। स्पष्टतः उसकी धार्मिक नीति मुख्यतः तात्कालीन आर्थिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक जरूरतों से अभिप्रेरित थी। ऐसे में औरंगजेब न तो नायक था और न खलनायक बल्कि कुछ कुछ हठी एवं कठोर तथा एक अकल्पनाशील राजनीतिज्ञ था जो तात्कालिक समस्याओं को समझने में असफल रहा और इसलिये अक्सर जटिल आर्थिक, प्रशासनिक एवं राजनीतिक समस्याओं का समाधान धार्मिक आधार पर करने का प्रयास किया फलतः नवीनतम समस्यायें और उलझ गई।

प्रसंगवश यह भी उल्लेखनीय है कि यद्यपि उसने राज्य के इस्लामी चरित्र को प्रोत्साहित किया, उलेमा वर्ग को तुष्ट करने का प्रयास किया किंतु उसने उन्हें राज्य की नीतियों पर पूरी तरह से हावी नहीं होने दिया। वस्तुतः राज्य का मौलिक चरित्र काफी हद तक बनाये रखा। ऐसा मानना है कि उसकी कट्टरवादी धार्मिक नीति के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ, उपलब्ध साक्ष्यों एवं तर्कों के आलोक में समीचीन नहीं लगता। फिर भी ऐसा माना जा सकता है कि अपने भूलों के कारण उसने अपने पीछे एक ऐसा साम्राज्य छोड़ा जो विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त था, खजाना लगभग खाली था, अमीर वर्ग विभाजित था तथा बहुसंख्यक प्रजा में हुकूमत से मोहभंग की प्रवृत्ति बढ़ रही थी।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि औरंगजेब के व्यक्तिगत विचार धार्मिक संकीर्णता से प्रभावित हो सकते हैं परंतु ये विचार उसकी राजनीतिक नीतियों का आधार नहीं माने जा सकते। एक शासक

के रूप में वह हिन्दू प्रजा के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझता थी। उसने कुछ मंदिर तुड़वाये तो कुछ को आर्थिक अनुदान भी दिये। इसे यह भी याद रखना चाहिये कि अकबर के समय से ही उदार धार्मिक नीति के विरुद्ध प्रतिक्रिया आरंभ हो चुकी थी जो दिनोंदिन प्रबल होती जा रही थी। इस परिवेक्ष्य में औरंगजेब के लिए न तो अकबर की तरह एक सहिष्णुतापूर्ण नीति अपनाना संभव था न हिन्दू प्रजा की पूर्ण अवहेलना संभव थी। इसी दुविधा में वह परस्पर विरोधी निर्णय लेने पर बाध्य हुआ जिस कारण उसकी धार्मिक नीति असफल सिद्ध हुई।

-०-